# सामान्य अध्ययन ( टेस्ट - I )

# GENERAL STUDIES (Test - I)

**मॉड्यूल - I / Module - I**

DTVF/17–M–**GS1**

*निर्धारित समय: तीन घंटे*
*Time allowed: Three Hours*

*अधिकतम अंक: 250*
*Maximum Marks: 250*

नाम (Name): MUKESH KUMAR LUNAYAT

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 01, 16/07/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

| 0 | 2 | 5 | 5 | 9 | 0 | 5 |
|---|---|---|---|---|---|---|

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): HINDI

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Mukesh

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

## Evaluation Analysis

| MARKS | 37 /250 |
|---|---|
| Introduction | B |
| Context | C |
| Language | C |
| Content | C |
| Conclusion | B |
| Structure | C |
| Current Link / Examples | — |

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

# व्यापक विश्लेषण / Macro Analysis

- स्पष्ट लेखन का प्रयास करें |

- विषयवस्तु उन्नत करने का प्रयास करें
  संरचनात्म उत्तर लिखने का प्रयास करें |
  सभी प्रश्नों को हल करने का प्रयास करें |

- 

- 

| Grade Card | |
|---|---|
| Grade 'A' | Very Good |
| Grade 'B' | Good |
| Grade 'C' | Satisfactory |
| Grade 'D' | Poor |


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. "बंगाल के राष्ट्रवादी कलाकार कला की एक ऐसी विधा की ओर उन्मुख हुए जिसने राष्ट्र के प्राचीन मिथकों एवं जनश्रुतियों को विभिन्न चित्रात्मक तत्त्वों को मिश्रित करके एक नवीन भारतीय शैली को जन्म दिया, जो पूर्वी दुनिया के आध्यात्मिक रंग में रंगी हुई थी।" उक्त कला के तत्त्वों के आधार पर कथन का विवेचन कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"The nationalist artists of Bengal were oriented towards such kind of knowing of the art that generated a new genre by mixing ancient myths and legends of the nation with various pictorial elements, that was painted in the spiritual color of the Eastern World." Discuss statement on the basis of the elements of above art. (250 words) 12.5

बंगाल में हम 20वीं सदी के प्रारंभ में विशेषतः 1910 के बाद आधुनिक कला के विकास के साक्ष्य पाते हैं।

इस दौर में अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने बंगाल में कला के विकास के आधुनिक दौर का नेतृत्व किया। इस कला की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं।-

1) विशुद्ध भारतीय।- बंगाल की यह कला विशुद्ध भारतीय थी। यद्यपि इसके पूर्व आधुनिक काल के प्रमुख चित्रकार राजा रवि वर्मा ने विक्टोरियन प्रवृत्तियों के वर्चस्व को तोड़ा था, परन्तु उनकी कला पर पाश्चात्य प्रभाव था।

अवनीन्द्र नाथ टैगोर की चित्रकला मुख्यतः रामायण व महाभारत, पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित थी।

2) पुनरुत्थानवादी – यह चित्रकला पुनरुत्थानवादी प्रकृति की थी। इसने प्राचीन चित्रकला की शैलियों के तत्वों को ग्रहण कर उन्हें नवीन रूप दिया।

3) इसमें चित्रकला के दौर की प्रमुख विषयवस्तु धार्मिक ही बनी रही। रामायण, महाभारत

[Examiner's notes:]
• अर्नेस्ट हैवेल • जैमिनी राय • नंदलाल • गगनेन्द्रनाथ इत्यादि की भी चर्चा करें।
संबंधित उदाहरण भी दें। यथा भारतमाता, तारा-के चित्र इत्यादि
बंगाल कला शैली के मुख्य तत्वों की भी चर्चा करें
→ अजंता बाघ मुगल शैली से प्रभावित
→ जापानी वाश तकनीक
→ आबरंग इत्यादि
स्पष्ट लेखन का प्रयास करें।


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि की चित्रात्मक प्रस्तुति ~~के~~ चित्रकला के माध्यम से जीवन में आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित किया।

1950 का दौर आते-आते बंगाल की यह चित्रकला शैली अप्रासंगिक होती गयी। अंततः में इसको न कोई अन्य शैली जारी नहीं रख पाती, न कि कोई तत्व ग्रहण कर सकी।

पाश्चात्य शैली से भिन्नता दर्शाते हुए राष्ट्रवादी प्रभाव की भी चर्चा करें

2



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. "भक्तिकाल से रीतिकाल की ओर प्रस्थान की जो झलक तत्कालीन साहित्य में मिलती है, वह वास्तव में सिद्धांत और व्यवहार में सामाजिक विचारों को दर्शाती है, जो जनता की आशा-आकांक्षाओं और चित्तवृत्ति का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब है।" व्याख्या कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"The glimpse of the shifting from Bhaktikal to Reetikal, which reflects in the literature of that time, actually portrays social notion in principle and practice, which is a direct reflection of the common man's expectations aspirations and imaginations." Explain. (250 words) 12.5

भक्तिकालीन साहित्य के दौर में जहां साहित्य के विषयों में आत्म-अनात्म के भेद-विभेद, ईश्वर शरणागति, परम तत्व के मध्य एकात्म की अभिव्यक्ति, परमेश्वर के साथ भक्तिपूर्ण संबंध एवं अन्य आध्यात्मिक विषय प्रमुखता लिये हुए थे परन्तु वर्तमान दौर में साहित्य की विषयवस्तु व्यापक रूप से बदल चुकी है। साहित्य के वर्तमान दौर में सभी भाषाओं को लांघते हुए एक समानता देखी जा सकती है वह है साहित्य द्वारा यथार्थ का चित्रण। अन्य शब्दों में वर्तमान में साहित्य समाज की स्थिति व सामाजिक विचारों को प्रतिबिंबित करती है।

वर्तमान में साहित्य जनता की भावी आशा-आकांक्षाओं एवं चित्तवृत्ति को दर्शाता है। चाहे वे हिंदी के साहित्यकार यथा नामवर सिंह, मुक्तिबोध आदि हो या शैलिज, सलमान रुश्दी जैसे अंग्रेजी साहित्यकार। अब साहित्य समाज में घट

प्रश्न की माँग के अनुसार उत्तर लिखने का प्रयास करें।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहा है, उसके चरित्र-चित्रण पर ज्यादा केंद्रित एवं यथार्थवादी होता जा रहा है।

स्पष्टत: भक्तिकाल से रीतिकाल की ओर यह प्रस्थान जनता की आशा-आकांक्षाओं व मनोवृत्ति का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब है।

भक्तिकालीन साहित्यिक विशेषताओं एवं रीतिकालीन साहित्यिक तत्वों की चर्चा करते हुए रीतिकालीन समाज में हुए परिवर्तनों का तत्कालीन साहित्य पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा करें

1/2



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' सांस्कृतिक विविधता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के महत्त्वपूर्ण अवयव के रूप में पहचानी जाती है, जो भूतकाल की परंपराओं के साथ-साथ समकालीन प्रथाओं को भी आत्मसात करती है। उक्त कथन को स्पष्ट करते हुए यूनेस्को द्वारा भारत में पहचाने गए ऐसे प्रतिनिधि विरासतों की चर्चा कीजिये। (250 शब्द) 12.5

'Intangible Cultural Heritage' is recognised as the important component of cultural diversity and creative expression which assimilates contemporary practices along with the traditions of the past. Discuss such representative heritages identified by UNESCO in India while explaining the above statement. (250 words) 12.5

यूनेस्को की "अमूर्त सांस्कृतिक विरासत" में कला, संगीत, थियेटर, नाट्य आदि से संबंधित ऐसी विधाओं को शामिल किया जाता है जो अपनी विशिष्ट विशेषताओं को सदियों से वर्तमान काल तक अक्षुण्ण बनाए हुए हैं। ये न केवल अपनी प्रकृति में परंपरागत हैं अपितु इन्होंने स्वयं को वर्तमान की प्रथाओं के अनुरूप भी ढाल लिया है। उदाहरणार्थ, राजस्थान में कालबेलिया जनजाति द्वारा कालबेलिया नृत्य।

भारत की निम्न विधाओं को यूनेस्को द्वारा "अमूर्त सांस्कृतिक विरासत" के रूप में मान्यता दी गई है :–

(i) कुटियाट्टम – यह प्राचीन काल (लगभग 8वीं सदी से) से केरल में चला आ रहा परंपरागत संस्कृत नाट्य है। इसके प्रमुख अभिनेता को "चाक्यार" कहा जाता है।

(ii) मुडियेट्टु – यह भी केरल का प्राचीन नाट्य है जो देवी काली व असुर दारिका पर आधारित है।

(iii) कालबेलिया – यह राजस्थान की कालबेलिया जनजाति द्वारा किया जाने वाला नृत्य है। 'गुलाबो' इस नृत्य की प्रमुख व प्रतिष्ठित कलाकार हैं।

अच्छा प्रयास

स्पष्ट लेखन का प्रयास करें


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पारंपरिक गुरु के ठठेरा

के ठठेरा का धातु कार्य

(iv) पंजाब

(v) लद्दाख के मठों में गाये जाने वाले बौद्ध मंत्र

(vi) परम्परागत वैदिक मंत्र जाप परंपरा - वैदिक काल में मंत्रजाप की 1000 से भी अधिक विधियां प्रचलित थी जिनमें वर्तमान में कुछ ही शेष रह गयी है।

(vii) रम्मन - यह उत्तराखंड के एक विशेष जिले में एक विशेष समुदाय के लोगों द्वारा रामायण पर आधारित वाद्य-उत्सव है। इस समुदाय के वर्तमान में कुछ ही लोग शेष रह गये है।

(viii) हाल ही में योग को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में शामिल किया गया है। योग एक प्राचीन भारतीय व्यवस्था है जिसके प्रतिपादक पतंजलि माने जाते है।

→ संकीर्तन
→ नौरोज
→ रामलीला
→ छऊ नृत्य
की भी चर्चा करें

उपरोक्त 8 के अतिरिक्त वर्तमान में (प्रश्न में) पाँच अन्य विधाएं भी यूनेस्को के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल हैं। यूनेस्को की इस पहल का इन प्राचीन अमूर्त विधाओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

(4)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में चिह्नित करने वाले मापदंडों की चर्चा कीजिये। इस प्रवर्ग में शामिल भाषाओं का उल्लेख करते हुए इसके लाभ बताइये। (250 शब्द) 12.5

Discuss the parameters that identify a language as classical language. Describe it's benefits while mentioning the languages included in this category. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत में संस्कृति मंत्रालय द्वारा (किसी भाषा को) शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया जाता है। इसके प्रमुख मापदंड निम्न है:-

(i) उस भाषा की अपनी विशिष्ट वर्णमाला होनी चाहिए।

(ii) उस भाषा में लिखे गये साहित्य का प्राचीन अभिलेख महत्वपूर्ण साहित्यों में स्थान होना चाहिए।

(iii) भाषा का अपनी विशिष्ट व्याकरण, उच्चारण प्रणाली होनी चाहिए।

वर्तमान में शामिल भाषाएं

i. संस्कृत
ii. मलयालम
iii. कन्नड़
iv. तेलुगु
v. तमिल
vi. ओडिसी उड़िया

लाभ

(i) इन शास्त्रीय भाषाओं को अपने विकास

प्राचीनता 1500-2000
→ साहित्य परंपरा मौलिक
→ आधुनिक से भिन्न
→ संयोग ... मूल्य, विरासत, गौरव साहित्य को बढ़ावा इत्यादि की चर्चा करें



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हेतु केंद्रीय सरकार द्वारा अनुदान दिया जाता है।

(ii) भारत के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय भाषा हेतु एक पृथक विभाग की व्यवस्था की जा सकती है।

(iii) सरकार समय-समय पर इन भाषाओं के विकास हेतु एवं अनुसंधान व विकास को प्रोत्साहित करने हेतु विद्वानों के समूह का गठन कर सकती है।

⇒ उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना

⇒ अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार की घोषणा की भी चर्चा करें

2½



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. 'वसुधैव कुटुम्बकम' की विश्व बंधुत्व की धारणा सभी पंथों व नस्लों को सौहार्द्रता के साथ जीने का आधार प्रदान करती है, लेकिन वर्तमान में यजदी समुदाय जिस शोषण व हिंसा का शिकार है, वह कहीं-न-कहीं इस धारणा पर प्रश्नचिह्न लगाता है। यजदी समुदाय के धार्मिक विश्वासों का उल्लेख करते हुए उक्त कथन की व्याख्या कीजिये। (250 शब्द) 12.5

The notion of universal brotherhood of 'Vasudhaiva Kutumbkam' provides the base to all sects and races for living together with harmony. But at present the exploitation and violence, which Yazidi community is facing are putting somewhere a question mark on this notion. Describe the statement given above while mentioning the religious beliefs of the Yazidi Community. (250 words) 12.5

यजदी समुदाय के प्रमुख धार्मिक विश्वास

- यह समुदाय प्रकृति की पूजा करता है।
- यह प्रकृति के सभी तत्वों को समान महत्व का मानता है
- प्रकृति की पूजा करने के नाते व मनुष्य को भी इसका एक अंग मानता है फलतः मनुष्य-मनुष्य के प्रति प्रेम, भाईचारा व सौहार्द को बढ़ावा देता है

वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा :-

- यह सम्पूर्ण विश्व को एक कुटुम्ब के रूप में देखती है। यह अपने में धार्मिक सहिष्णुता व धार्मिक समन्वय को समाहित किए हुए है
- यह सम्पूर्ण पंथों व नस्लों को सौहार्दता के साथ जीने का आधार प्रदान करती है

(अन्य तत्वों यथा => विभिन्न धर्मों से समानता -> वैदिक देवता में विश्वास -> पुनर्जन्म में विश्वास इत्यादि की चर्चा करें)

(उत्तर के आरंभ में वसुधैव की चर्चा करें)


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के समक्ष चुनौतियाँ

(i) धार्मिक व्यावृत्तिवाद
- अपने ही धर्म/पंथ को एकमात्र सत्य व सर्वश्रेष्ठ मानने का भाव
- यह अन्य धर्मों को मानने वालों के प्रति घृणा भाव को बढ़ावा देता है।

(ii) धार्मिक कट्टरता, वैमनस्यता एवं धार्मिक आतंकवाद
- वर्तमान में लगभग सम्पूर्ण विश्व के समक्ष ISIS जैसी आतंकवादी चुनौतियों, धार्मिक कट्टरपंथ के विस्तार ने एक ऐसी सपला उत्पन्न की है जिसने वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को ठेस पहुंची है।

(iii) बहुध्रुवीय विश्व के वर्तमान दौर में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का विचार काल्पनिक मात्र प्रतीत होता है।

(iv) वर्तमान में शरणार्थी समुदाय विस्थापन व भेदभाव का सामना कर रहा है। यह वसुधैव कुटुम्बकम् की सीमाओं को स्पष्ट करता है।

शरणार्थी समुदाय के निवास स्थान की चर्चा करें

अनावश्यक भटकाव से बचें

शरणार्थी समुदाय के लोगों पर होने वाले हिंसा व अत्याचारों की चर्चा करते हुए समस्या के समाधान हेतु आवश्यकता अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों की भी चर्चा करें

1



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

6. "देश का बँटवारा एक ऐसी सांप्रदायिक राजनीति का आखिरी बिन्दु था, जो 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में शुरू हुआ।" परीक्षण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"Partition of the country was the end point of communal politics that started in the last decades of 19th century." Examine. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1947 में भारत का भारत एवं पाकिस्तान के रूप में विभाजन व स्वतंत्रता कोई क्षणिक घटना नहीं थी अपितु इसकी जड़े 1857 के संग्राम की हिंदू-मुस्लिम एकता के बाद के वर्षों में ब्रिटिश की फूट डालो राज करो की नीति में तलाशी जा सकती है।

विकासक्रम:-

(i) 1888 में सैय्यद अहमद खाँ द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के विरोध में पैट्रियाटिक एसोसिएशन की स्थापना एवं ब्रिटिश सरकार द्वारा सैय्यद अहमद खाँ को समर्थन जो कालान्तर में हिंदू-मुस्लिम एकता के कट्टर विरोधी हो गए।

(ii) सरकार द्वारा 1905 में बंगाल के विभाजन का उद्देश्य प्रशासनिक सुविधा न होकर वस्तुतः बंगाल में हिंदुओं को अल्पसंख्यक बनाना था।

(iii) स्वदेशी आंदोलन के दौरान/बाद में ब्रिटिश सरकार ने मुस्लिम लीग की स्थापना (1907), 1909 में मुस्लिम संप्रदाय को पृथक निर्वाचन का अधिकार प्रदान करना वस्तुतः ऐसे बीज बोने के समान था जिसका फल 1947 में विभाजन के रूप में हुआ।

(iv) कालान्तर में 1916 में कांग्रेस द्वारा मुस्लिम लीग को मान्यता प्रदान करना, खिलाफत आंदोलन में सक्रियता, 1930-40 के दशक में जिन्ना द्वारा पृथक पाकिस्तान की मांग आदि कारकों ने 1947

संप्रदायवादी राजनीति को परिभाषित करें

तथ्यों में त्रुटि है, दूर करें (1906)

अल्पप्रयास

अन्य तथ्यों का भी समावेश करें यथा
→ कम्युनल अवार्ड
→ 1937 में अलग राष्ट्र निर्माण की मांग



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तक आते-आते विभाजन को अवश्यंभावी बना दिया।

परन्तु 19वीं सदी के अंतिम दशकों की घटनाओं का इसमें उतना व्यापक महत्व नहीं है जितना 20वीं सदी की तीसरे व चौथे दशक की घटनाओं का है। वस्तुतः पृथक-पाकिस्तान के निर्माण का कारण मुस्लिम लीग में जिन्ना का नेतृत्व, हिंदू-कट्टर पंथियों द्वारा अनेक मोर्चों पर मुस्लिम लीग का विरोध, पृथक-निर्वाचन आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

परन्तु निःसंदेह 19वीं सदी के अंत से ही ब्रिटिश की फूट डालो राज्य करो की नीति सुदृढ़ होती गई जिसकी अभिव्यक्ति विभाजन के रूप में हुई।

3



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. "राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न कालखंडों में किसानों की मांगों के प्रति कांग्रेस के दृष्टिकोण में भारी विविधता दृष्टिगत होती है।" स्पष्ट कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"There is a huge diversity can be observed in the Congress's stand-point towards the demand of the peasants in different time segments of the national movement." Explain. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न कालखंडों में किसानों के प्रति कांग्रेस के दृष्टिकोण को निम्न 3 कालखंडों में बांटा जा सकता है -

(i) स्थापना से गांधी के आगमन (1915) तक

इस काल में कांग्रेस मुख्यतया संवैधानिक सुधारों में ही रही और इन्होंने अपने मंच से किसानों के मुद्दों का प्रभावी रूप से नहीं उठाया। यहाँ तक कि 1905 के स्वदेशी आंदोलन में किसानों की भूमिका नगण्य थी।

(ii) गांधी के आगमन से 1935 के अधिनियम तक

- अब कांग्रेस गांधीजी के नेतृत्व में किसानों की मांगों में प्रभावात्मक भूमिका निभाने लगी।
- कांग्रेस ने गांधीजी के चंपारण, खेड़ा एवं बारदोली सत्याग्रह (गांधीजी के निर्देशन में पटेल का नेतृत्व) का पुरजोर समर्थन किया।
- कांग्रेस ने अपने मंच से किसानों हेतु आपदाकाल में ऋणमाफी, कृषि आगतों हेतु ऋण, वाणिज्य की दरों को कम करने आदि की मांग उठायी।
- इसी कारण बड़ी संख्या में किसान कांग्रेस में शामिल हुए व असहयोग एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।
- कांग्रेस ने अखिल किसान सभा, मालाबार, किसान [illegible]

औपनिवेशिक काल में किसानों के शोषण की चर्चा करें।

स्पष्ट लेखन की प्रयास करें।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 1935 से विभाजन तक

- 1935 के भारत शासन अधिनियम के प्रांतों में स्वायत्त शासन की स्थापना की। चूँकि कृषि राज्य सूची का विषय था, अतः इसलिए प्रांतीय सरकारों ने किसानों की मांगों के अनुरूप अनेक कार्य किए। सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, आपदाकाल में कर माफी एवं कृषि हेतु ऋण के प्रावधान किए गए।
- इसी दौर में जमींदारी उन्मूलन का भी समर्थन कांग्रेस के कुछ सदस्यों द्वारा किया गया।

स्पष्ट किसानों की मांगों के प्रति कांग्रेस के नजरिए में वर्ष-दर-वर्ष व्यापक परिवर्तन हुए एवं कांग्रेस में किसानों एवं उनके हितों की भागीदारी सुनिश्चित हुई।

बकाश्त मुद्दों को उठाकर प्रांतीय सरकारों द्वारा बिलों को पास किया गया
अ० भारतीय किसान सभा का गठन
रियासतों में किसान आंदोलनों की चर्चा करें

अन्य पक्ष

2½

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. औपनिवेशिक अर्थतंत्र ने किस प्रकार आदिवासी विद्रोहों के प्रस्फुटन की पृष्ठभूमि का निर्माण किया? पूर्वी भारत के आदिवासी विद्रोहों का उदाहरण लेते हुए उत्तर दीजिये। (250 शब्द) 12.5

How colonial economy build background of eruption of tribal revolts? Explain above statement by citing the examples of tribal revolts in eastern India. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

औपनिवेशिक अर्थतंत्र ने भारत में आदिवासी विद्रोहों के प्रस्फुटन की पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

(i) अंग्रेजों के आर्थिक हितों एवं आदिवासियों की जीवन-परंपराओं में व्यापक अन्तर था। अंग्रेजों ने विशेषतः छोटा-नागपुर क्षेत्र में आदिवासी क्षेत्रों पर संसाधनों की प्राप्ति हेतु अधिकार कर विद्रोहों के प्रस्फुटन को बढ़ावा दिया।

(ii) अंग्रेजों ने आदिवासियों की प्रथा-परंपराओं में हस्तक्षेप किया।

(iii) अंग्रेजों द्वारा ~~[illegible]~~ अधिक राजस्व वसूलने हेतु कृषि के विस्तार को बढ़ावा दिया गया। इन क्षेत्रों में कृषि के प्रसार से आदिवासियों के हितों पर कुठाराघात किया।

(iv) पूर्वी भारत में विशेषतः मुंडा विद्रोह, संथाल विद्रोह आदि के उभव का कारण ब्रिटिशों द्वारा उनके क्षेत्रों पर आधिपत्य करना प्रमुख था।

(v) पूर्वोत्तर भारत में भी खासी व गारो विद्रोह की जड़ ब्रिटिशों द्वारा इन पहाड़ी क्षेत्रों पर अधिकार में रही।

ब्रिटिश अर्थतंत्र में ब्रिटिश की सभी प्रकार की आर्थिक-व्यापारिक नीतियों को समझा...

(Evaluator's remarks in margin:)
औपनिवेशिक शासन की भौतिक विशेषताएँ स्पष्ट करें ↓ आदिवासियों की सामान्य जीवनशैली का उल्लेख करें
सामाजिक, धार्मिक हस्तक्षेप, ~~[illegible]~~, [illegible], वन कानून इत्यादि की चर्चा करें
अन्य विद्रोहों का उल्लेख करते हुए और विस्तृत चर्चा करें
स्पष्ट लिखें वन कानून का प्रभाव करें
यथा → कोल → खोंड → [illegible] → [illegible]



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ध्येय ब्रिटिश हितों की पूर्ति करना था, इससे न केवल आदिवासी क्षेत्रों की जनजातियों एवं सामाजिक अवस्था प्रभावित हुई बल्कि कई स्थलों पर आदिवासियों में मानवजनित गरीबी को बढ़ावा मिला, वनों पर उनके अधिकारों को सीमित कर दिया गया। इन सब के कारण 18वीं सदी के आरंभ से ही समय-समय पर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध जनजातियों द्वारा संगठित आंदोलन एवं विद्रोह हुए।

1½



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

9. क्या आप मानते हैं कि 18वीं-19वीं शताब्दी में शुरू हुआ भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन, भारत में राष्ट्रवाद के अंकुरण की पूर्व शर्त थी? तर्कों द्वारा अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिये। (250 शब्द) 12.5

Do you agree that the Indian renaissance movement started in 18th-19th century was the precondition for the germination of nationalism in India. Substantiate your answer with arguments. (250 words) 12.5

18वीं एवं 19वीं शताब्दी में शुरू हुआ भारतीय पुर्नजागरण जिसका नेतृत्व राजा मोहन राय, ईश्वर चंद विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, केशव चंद्र सेन, डी. के. कर्वे, आदि कर रहे थे है। भारत में राष्ट्रवाद के अंकुरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

परंतु भारतीय पुर्नजागरण आंदोलन को भारत में राष्ट्रवाद के अंकुरण की पूर्व शर्त की संज्ञा देना संगत नहीं है क्योंकि

1) यह पुर्नजागरण आंदोलन भारत में राष्ट्रवाद की पूर्वशर्त न होकर एक समन्वित एवं समानान्तर विकसित होने वाली प्रक्रिया थी।

2) इस आंदोलन के अलावा भी अन्य कई कारक ऐसे थे जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के अंकुरण में सहायता की। इनमें

i) ब्रिटिश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक साम्राज्यवादी नीतियों के कारण सम्पूर्ण देश में एकीकरण स्थापित हो जाना

ii) ब्रिटिश की शिक्षा नीति के कारण भारतीयों द्वारा पाश्चात्य विचारों की शिक्षा ग्रहण करना

iii) ब्रिटिश की शोषणकारी नीतियों के विरुद्ध भावना

iv) रेलवे द्वारा एकीकरण

(Examiner's remarks in margin: तत्कालीन सामाजिक समस्याओं की चर्चा करें ↓ ; राष्ट्रवाद के उदय में पुनर्जागरण की भूमिका की चर्चा करें ↓ ; राष्ट्रवाद के उदय के अन्य कारकों की भी चर्चा करते हुए निष्कर्ष लिखें ; आपके उत्तर में अन्तर्विरोध प्रतीत हो रहा है)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि ब्रिटिश मारकों ने भी भारतीयों में एकता एवं ब्रिटिशों को सभी का साझा दुश्मन बना दिया।

(iii) ~~ब्रि~~ भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन यद्यपि सामाजिक-धार्मिक सुधारों के द्वारा समाज को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण रहा एवं भारतीयों में राष्ट्रवाद ~~के~~ के अंकुरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी परन्तु इस सम्पूर्ण दौर में भारत में राष्ट्रवाद के उदय हेतु इसे ही एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता।

स्पष्ट यह आंदोलन, राष्ट्रवाद के अंकुरण के अनेक कारणों में एक कारण मात्र था न कि पूर्वशर्त।

12



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

10. "यदि भारत औपनिवेशिक शासन के दौर से नहीं गुज़रा होता, तो भारतीय समाज ने अपने मध्यकालीन जड़ता को तोड़कर आधुनिक काल में प्रवेश नहीं किया होता।" कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"If India had not passed through a period of colonial rule, then Indian society would not have broken its medieval numbers and entered into modern era." Critically examine the statement. (250 words) 12.5

सकारात्मक पक्ष

(i) औपनिवेशिक शासन काल ने भारतीयों में विशेषतः 1835 के बाद मैकाले की शिक्षानीति ने पाश्चात्य विचारों के प्रभावों के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

(ii) इस काल में पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त अनेक विद्वानों, समाज-सुधारकों यथा राजा राम मोहन राय, डी.के. कर्वे, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, डेरोजियो आदि ने भारतीय मध्यकालीन जड़ताओं यथा सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या, बालिकाओं हेतु शिक्षा आदि का समर्थन किया।

(iii) ~~पाश्चात्य~~ कानूनी व औपनिवेशिक दंड व न्यायिक-नीतियों ने भी मध्यकालीन जड़ता को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

[red margin remarks:] → राजनैतिक एकीकरण → शासन प्रणाली का विकास → औद्योगीकरण इत्यादि की भी चर्चा करें

विपक्ष :-

(i) भारतीय समाज में विशेषतः 18-19वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधारों की प्रवृत्ति को यदि ब्रिटिशों से स्वतंत्र माना जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अतः इन सुधारकों ने बिना औपनिवेशिक शासन की मदद लिये व्यक्तिगत/सामूहिक स्तर पर इन कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठायी।

(ii) अनेक अवसरों पर भारतीय सामाजिक सुधारकों

[red margin remark:] औपनिवेशिक शासन के वास्तविक उद्देश्यों की भी चर्चा करें।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की कट्टरता व जड़ताओं को तोड़ने के पीछे प्रमुख वजह थी न कि औपनिवेशिक शासन।

उदाहरण: (i) राजा राम मोहन राय द्वारा सती प्रथा का विरोध → कालान्तर में बैंटिक द्वारा प्रतिक्रिया

(ii) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयासों से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम

(iii) ब्रिटिशों के आगमन के वर्षों के समय भारत पर मुगल शासन के मराठों द्वारा अधिग्रहण की प्रबल संभावनाएँ थी, हालांकि ऐसा हो न सका। हो सकता था कि ब्रिटिशों के न आने पर भी यदि मराठों का भारत पर शासन होता तो मध्यकालीन जड़ताओं से छुटकारा मिलता। हालांकि यह एक संभावना मात्र है।

(iv) बिना औपनिवेशिक शासन के भी अनेक देशों ने लोकतंत्र, प्रजातंत्र, उदारवाद, स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय जैसे अवधारणाओं को अपनाया है एवं अपनी जड़ताओं को तोड़ा है।

स्पष्टतः उपरोक्त में किसी भी एक पक्ष को पूर्णतया सत्य नहीं ठहराया जा सकता।

1½

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

11. "गांधी जी के अहिंसात्मक आंदोलन की तपिश ने न केवल सर्वोच्च सत्ता को वार्ता की मेज पर आने को बाध्य किया, अपितु जन-सामान्य के बीच जुझारुपन की भावना को भी तीक्ष्ण किया।" टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"The heat of non-violence movement of Gandhiji not only forced the supreme powers to come to the conference table, but also strengthened the fighting spirit among the common masses." Comment. (250 words) 12.5

गाँधीजी के अहिंसात्मक आंदोलन जिनकी भारत में चंपारण सत्याग्रह से शुरुआत हुई ने आगामी 30 वर्षों में प्रत्येक स्तर पर न केवल ब्रिटिशों को समझौतों हेतु बाध्य किया अपितु इसने जन-सामान्य के बीच जुझारूपन की भावना को तीक्ष्ण किया। फलतः 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जनता का यह जुझारूपन अपने चरम पर पहुँचा जब बिना महत्वपूर्ण नेताओं के आम-जनता के आंदोलन को नेतृत्व व आधार प्रदान किया।

(गाँधीजी के आगमन के पूर्व स्वतंत्रता आंदोलन की विभिन्न वर्गों तक पहुँच की चर्चा करें।)

(i) समझौते पहलू

- ब्रिटिश सरकार गांधीजी की अहिंसात्मक प्रणाली के कारण हमेशा समझौते हेतु बाध्य हुई क्योंकि अहिंसा को हथियार के रूप में अपनाने के कारण वह इनका दमन नहीं कर सकी।
- गांधीजी के आरंभिक 3 आंदोलनों- चंपारण, खेडा, अहमदाबाद मिल मजदूर में प्रत्येक में मिली सफलता ने गांधीजी को आगे भी इसे निरंतर जारी रखने का निश्चय किया।
- 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान गांधीजी के सत्याग्रह, अहिंसात्मक सविनय आंदोलन का ही परिणाम था कि ब्रिटिश सरकार कांग्रेस से समझौ

(स्पष्टता की चर्चा प्रश्न के अंत में करें) (स्पष्ट लेखन का ध्यान करें)


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयास: बराबरी के स्तर पर (गोलमेज़ सम्मेलन हेतु) बात्तचीत हुई।

(ii) जुझारूपन
- अपने आरंभिक आंदोलनों में ही एवं अफ्रीका के अनुभवों से ही गांधीजी किसी भी आंदोलन में आंदोलन के महत्व को भली भांति समझ चुके थे।
- गांधीजी के अहिंसात्मक उपायों ने आंदोलन को प्रभावित किया वह न केवल उच्च वर्ग को अपितु महिलाओं, किसानों, मजदूरों, व्यापारियों को भी अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहे।
- सत्याग्रह व भूख हड़ताल के उपायों ने आंदोलन में भावनात्मक दृढ़ता को मजबूत किया।
- गांधी ने हिंसा की बजाय अहिंसात्मक मार्ग अपनाकर जनता में जुझारूपन भी उत्पन्न किया क्योंकि सरकार द्वारा उत्पीड़न व दमन का भय उन्हें नहीं सता सका।

अहिंसात्मक आंदोलन के सम्पूर्ण भारतीय आंदोलन को दोहरे फायदे हुए।
(क) कांग्रेस को ब्रिटिश सरकार के समकक्ष खड़ा किया
(ख) आंदोलनों में आमजन की सहभागिता सुनिश्चित हुई।
इन दो कारणों की वजह से ही भारत स्वतंत्रता प्राप्ति में सफल हो गया।

[Evaluator's red-ink remarks: "गांधीजी की पहचान जननायक की... चर्चा करें"; "सम्मेलन"; "अच्छा प्रयास"; "रचनात्मक कार्यों की भी चर्चा करें। यथा — संघर्ष विराम संघर्ष; ↳ शराबबंदी; ↳ अस्पृश्यता उन्मूलन; ↳ शिक्षा में सुधार; ↳ खादी को बढ़ावा"; score: 3½]



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

12. "प्रत्येक देश के इतिहास में एक ऐसा समय आता है जब प्रशासनिक व्यवस्था को पूर्णतया विखण्डित करके समय के अनुकूल उसकी कायापलट और पुनर्गठन करना आवश्यक हो जाता है।" लॉर्ड कर्ज़न के प्रशासनिक नीतियों के संदर्भ में उक्त कथन पर प्रकाश डालें। (250 शब्द) 12.5

"There comes a time in the history of every nation when a need arises to completely shatter the administrative system into pieces to makeover and overhaul it as per the need of the time." Elucidate in the context of administrative policies of Lord Curzon. (250 words) 12.5

कर्जन के प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण की चर्चा करें

लॉर्ड कर्जन का 1899 से 1905 का कार्यकाल भारत में अनेक अधिनियमों, रिपोर्टों, समितियों के कार्यकाल के रूप में प्रसिद्ध है।

लॉर्ड कर्जन ने भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन लाए, इसके कायापलट एवं पुनर्गठन हेतु इसके प्राचीन चली आ रही प्रशासनिक व्यवस्था को खंडित करने का प्रयास किया।

(i) चूंकि इस समय भारत में कांग्रेस के नेतृत्व में संवैधानिक सुधारों की मांग गति पकड़ रही थी जिसका नेतृत्व बंगाल द्वारा किया जा रहा था। अतः लॉर्ड कर्जन ने प्रशासनिक सुविधा को बहाना बनाकर बंगाल के राष्ट्रवादी आंदोलन को कमजोर करने हेतु बंगाल का विभाजन कर दिया। इसने अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों को बंगाल में भी असुरक्षित बना दिया।

(ii) शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम 1904 के माध्यम से कर्जन ने विश्वविद्यालयों पर सीनेट व सिंडिकेट के नियंत्रण को



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रभावी बनाया। हालांकि कर्जन ने शिक्षा के विकास हेतु प्रतिवर्ष 5 लाख रुपये देने की घोषणा की। इस प्रकार प्राचीन से चली आ रही विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता को काफी हद तक समकालीन परिस्थितियों (राष्ट्रवाद के बढ़ने) के कारण कर्जन ने काफी हद तक परिवर्तित कर दिया।

(iii) कर्जन ने पूर्व के वायसरायों द्वारा अपनायी गयी कांग्रेस के प्रति सहयोग की नीति में भी परिवर्तित कर दिया।

(iv) कर्जन ने पुलिस, प्रशासन व न्यायिक लोगों में ब्रिटिशों की सर्वोच्चता को स्थापित करने के हेतु प्रयास किए।

स्पष्टतः कर्जन की प्रशासनिक नीतियों का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन उभार रहे राष्ट्रवाद को कमजोर करना व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के समर्थकों को तोड़ना था। इन्हीं लक्ष्यों के [illegible] उन्होंने प्रशासन का कायापलट एवं [illegible] किया।

में क्या परिवर्तन किए स्पष्ट करें।
अन्य
↳ पुलिस आयोग
↳ शिक्षा सुधार के लिए आयोग
↳ वाणिज्य उद्योग विभाग का गठन
↳ कलकत्ता महापालिका अधिनियम
↳ रेलवे बोर्ड का गठन इत्यादि

अस्पष्ट प्रयास

3



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

13. "वर्ष 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण मात्र द्विपक्षीय संबंधों में तनावों का परिणाम न होकर, चीन की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से त्यक्ता, अलगाव एवं निराशा की भी उपज थी।" टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"The 1962 China attack on India was not only a result of confrontation in the bilateral relations, but was also resultant of Chinese isolation, separation and disappointment from the world politics." Comment. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1962 का भारत-चीन युद्ध हेतु द्विपक्षीय कारकों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से चीन की त्यक्ता, अलगाव व निराशा भी जिम्मेदार थी।

1. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात शीत युद्ध के आरंभ होने के कारण सम्पूर्ण विश्व दो ध्रुवों में बंट गया था।

II. अमेरिका व सोवियत संघ के नेतृत्व वाले इन ध्रुवों में चीन की भूमिका, महत्व व स्थिति अधिक महत्वपूर्ण नहीं थी।

III. चीन 1950 से 1960 के दशक में अपने यहां ही साम्यवाद के अपने विचित्र प्रयोगों से ... घरेलू समस्याओं ... रहा। इस पृष्ठभूमि में उसका अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से अलगाव व निराशा हो गई।

(iv) ... में हालांकि भारत द्वारा 1954 में चीन से पंचशील सिद्धांत पर हस्ताक्षर किया गया था जिसका एक अंग परस्पर अनाक्रमण की नीति भी था।

इसी दौर में नेहरू के नेतृत्व में भारत ने गुट-

*(परीक्षक की लाल टिप्पणियाँ: "प्रश्न का दुहराव न करें"; "आणविकवाद, भारत से तिब्बत विवाद की चर्चा करें"; "अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अलगाव के उदाहरण — ताइवान, कोरिया युद्ध, ... स्थिति, रूस-चीन दूरी की चर्चा"; "स्पष्ट लेखन का प्रयास करें")*


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

धीरे प्रगति की राह पकड़ ली थी। इसी काल में भारत द्वारा नव्य-स्वतंत्र देशों के मध्य निर्गुट आंदोलन नैम (Non-Alienel movement) को नेतृत्व प्रदान करना भारत के अंतर्राष्ट्रीय व सामरिक महत्व को प्रतिध्वनित करने लगा था। चीन कहीं चीन एशिया में अपने समकक्ष दूसरी शक्ति नहीं देखना चाहता था।

इस प्रकार द्विपक्षीय कारणों के अलावा अन्य कारण भी 1962 के भारत-चीन युद्ध हेतु जिम्मेदार थे।

(1)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

14. 1970 के दशक में वे कौन-सी परिस्थितियाँ विद्यमान थी जिसने एक सशक्त आंदोलन को जन्म दिया? यह आंदोलन अपने किन अंतर्निहित दोषों के कारण सत्ता का विकल्प नहीं बन पाया? 12.5
(250 शब्द)

Which conditions were prevailing in the decade of 1970 that gave birth to an empowered movement? Due to what intrinsic flaws this movement could not become an alternative to power? (250 words) 12.5

1947-1967 के काल में भारत में केन्द्र व लगभग सभी राज्यों में कांग्रेस के नेतृत्व में सरकारें बनी। 1967 में प्रथमतया गैर-कांग्रेसी सरकार तमिलनाडु में बनी। 1970 तक आते-आते व 1970 के दशक में अनेक ऐसे कारण थे जिन्होंने जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में एक सशक्त आंदोलन को जन्म दिया। इनमें प्रमुख है।—

गलत तथ्य न लिखें।

1957 केरल

(i) न्यायपालिका व विधायिका में अनेक मुद्दों पर टकराव

- 1967 में गोलकनाथ मामले के बाद विधायिका द्वारा क्रमिक संविधान संशोधनों के द्वारा न्यायपालिका को प्रत्युत्तर दिया गया।
- संसद द्वारा न्यायपालिका की स्वतंत्रता व शक्तियों के संतुलन सिद्धांत को चुनौती दी गई। प्रत्युत्तर न्यायपालिका ने 1973 में केशवानन्द मामले में अपने फैसले के रूप में दिया।

प्रबुद्ध सिविल समाज ने विधायिका द्वारा न्यायपालिका की सर्वोच्चता को संकट में डालने की भावना को बल दिया एवं विरोध किया।

(ii) सरकार द्वारा निरंकुश निर्णय

- जबरन नसबंदी जैसे निर्णयों के विरोध में सिविल समाज जगा।

2



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) आर्थिक कारक

1970 के दौरान भारत की विकास दर काफी कम थी। गरीबी, बेरोजगारी आदि कारकों ने आंदोलन को हवा देने का काम किया।

(iv) सरकार उस दौर राजनीतिक व सिविल अधिकारों को दबाने को प्रयासरत थी।

(v) शासन पर गैर-संविधानात्मक (extra-constitutional) तत्व हावी हो रहे थे।

(vi) मंत्रिपरिषद व केंद्र सरकार की शक्तियां एक ही हाथ में केंद्रित हो चुकी थी।

(vii) आंदोलनकारियों पर अत्याचारों, पुलिस द्वारा ज्यादतियां आदि ऐसे कारक थे, जिन्होंने आंदोलन को हवा दी।

असफलता के कारण

आंदोलन सुसंगठित नहीं था। आंदोलन के विभिन्न नेतृत्वधारियों यथा जयप्रकाश नारायण, चौधरी चरण सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी में समन्वय का अभाव था। वे आंदोलन को एक निश्चित दिशा देने में असमर्थ रहे। इसके अलावा आपातकाल ने जनसामान्य को आंदोलन से परे कर दिया। प्रेस-स्वतंत्रता पर कई प्रकार के बंधन लगा दिए गए। इन्हीं कारणों से यह आंदोलन सत्ता का विकल्प नहीं बन पाया।


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

16. "धुरी राज्यों के धराशाही होते ही मित्र राष्ट्रों के मध्य मित्रता भी समाप्त हो गई तथा उनके बीच तनाव, अविश्वास और घृणा का विकास हुआ जिसकी परिणति शीत युद्ध के रूप में सामने आई।" परीक्षण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"After the collapse of axis powers, friendship among allied powers also ended and tension, distrust and hatred developed among them that culminated into cold war." Examine. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के साथ एक ओर जहाँ धुरी राष्ट्र अब विश्व में शक्ति के रूप में नहीं बचे थे वहीं मित्र राष्ट्रों में भी आपसी हितों व निहित स्वार्थों के कारण तनाव, अविश्वास व घृणा का विकास हो गया था।

इस दौर में एक समूह का नेतृत्व जहाँ अमेरिका कर रहा था वहीं दूसरे समूह का नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था। इससे पहले प्रथम युद्ध व पिछले 100-200 सालों में महाशक्ति के रूप में शुमार ब्रिटेन यद्यपि मित्र राष्ट्रों का हिस्सा था परंतु ब्रिटेन के दिन अब लद चुके थे। ब्रिटेन का महत्व कम हो गया था। अब ब्रिटेन में न तो पुनः अपने आप को विश्व की शक्ति के रूप में उभरने की क्षमता व सामर्थ्य बचा था, न ही बदलते शक्ति समीकरणों की पृष्ठभूमि में सोवियत संघ व अमेरिका उसे उभरती शक्ति के रूप में देखना चाह रहे थे उनकी स्थिति विश्व युद्ध

मित्र राष्ट्रों की मित्रता का आधार → उपजे आपसी संदेहों के कारणों की चर्चा → परिणामस्वरूप शीतयुद्ध का उद्भव की चर्चा करें

प्रश्न की माँग के अनुसार उत्तर लिखने का प्रयास करें


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की पूर्वसंध्या पर था। स्पष्टतः अब विश्व-पटल पर केवल दो ही शक्तियाँ शेष रह गयी थी - अमेरिका व सोवियत संघ। सोवियत संघ के विघटन तक इन्हीं दोनों शक्तियों में शीत-युद्ध चलता रहा।

1/2

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

17. "अमेरिकी क्रांति ने राजनीतिक अभिनव परिवर्तनों की एक शृंखला आरंभ की जो बाद के काल में अत्यंत उपयोगी साबित हुई।" विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"American revolution started a series of political innovative changes that became very fruitful in the later period." Analyse. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1776 के वर्ष में आरंभ हुई अमेरिकी क्रांति के प्रभाव वर्तमान काल तक न सिर्फ अमेरिका में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में देखे जा सकते हैं।

वस्तुत: 1787 में अमेरिकी संविधान के लागू अपनाया गया होते ही अमेरिका एक स्वतंत्र एवं लोकतांत्रिक रिपब्लिक राष्ट्र बन गया। इस क्रांति ने सम्पूर्ण विश्व में राजनीतिक अभिनव परिवर्तनों की एक ऐसी शृंखला आरंभ की जिससे प्रभावित होकर अनेक औपनिवेशिक में स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना को बल मिला।

1789 में प्रभावी हुआ

प्रमुख अभिनव परिवर्तन

1) लिखित संविधान - अमेरिकी क्रांति की परिणति एक अमेरिका व लिखित संविधान से कानून के शासन पर कार्य करते पहला राष्ट्र की रूप में हुई। इसने कालांतर में अन्य देशों को भी आंदोलन करने को प्रेरित किया।

स्पष्ट लेखन का ख्याल करें।

ii) न्यायपालिका की सर्वोच्चता

iii) राजतंत्र का अंत, प्रजातंत्र की स्थापना - यह एक संदर्भ में 18 वीं सदी की सबसे ऐतिहासिक घटना थी जिसने सम्पूर्ण विश्व पर



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विश्वस्तर में इसकी प्रभाव पड़े। प्रजातंत्र में अमेरिका हर क्षेत्र में प्रगति कर सका एवं कुछ ही दशकों में और, 20वीं सदी के मध्य तक महा-आर्थिक विश्व की दो शक्तिशाली शक्तियों में शुमार हो गया]

(iv) कानून का शासन :- स्वतंत्र या किसी विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की अनुपस्थिति अमेरिकी क्रांति का ऐसा परिणाम थी जिसने समस्त अमेरिकीयों को कानून की दृष्टि में एक ही धरातल पर ला खड़ा कर दिया। कालांतर में "मेल्टिंग-पोट" के रूप में अमेरिकी छवि बनाने में अमेरिकी क्रांति के इन्हीं मूल्यों को महत्वपूर्ण माना जा सकता है]

=> भूमिकाओं ... => औपनिवेशिक विस्तार => लैटिन अमेरिका का भी उल्लेख करें।

अमेरिकी क्रांति के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों की भी चर्चा करें।

2½



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

18. "अगर स्टेट्स जनरल की बैठक नहीं होती तो फ्रांसीसी क्रांति की शुरूआत भी नहीं हुई होती।" उक्त कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? (250 शब्द) 12.5

"If the meeting of Estate General wouldn't held then french revolution couldn't have been started." To what extent you agree with the above mentioned statement. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फ्रांस में फ्रांसीसी क्रांति हेतु केवल स्टेट्स जनरल की बैठक को जिम्मेवार ठहराना न्यायोचित नहीं होगा क्योंकि -

i) स्टेट्स जनरल की बैठक वस्तुतः फ्रांस में बिगड़ते हुए दशकों से लुई 16वें व उसकी रानी के द्वारा किये जा रहे निरंकुश शासन के विरोध की अभिव्यक्ति मात्र थी।

(ii) हालांकि कई वर्षों से स्टेट्स जनरल की बैठक नहीं हुई थी राजा की वजह से राजवंश के निम्न वर्ग के अधिकारियों में क्षोभ व्याप्त था परन्तु इससे अधिक फ्रांस की क्रांति हेतु वे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक कारक जिम्मेदार थे, जिन्होंने फ्रांस के आमजन में राजतंत्र के विरोध की भावना भर दी थी।

(iii) फ्रांस में विपरीत आर्थिक स्थितियां होते हुए भी, एक के बाद एक युद्ध में फ्रांस खाद्य-संकट का सामना कर रहा था। राजतंत्र द्वारा शानशाही में किए गए खर्चों व रानी की आरामतलबी ने क्रांतिकारियों को एकजुट होने हेतु

भूमिका फ्रांस में व्याप्त तत्कालीन परिस्थितियों की चर्चा करें

स्टेट्स जनरल की भूमिका की चर्चा

क्रांति पर इसका प्रभाव तथा अन्य कारकों का उल्लेख करते हुए निष्कर्ष


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेरित किया।

(ग) चर्च के निम्न अधिकारियों को भी क्रांतिकारियों को समर्थन प्राप्त था क्योंकि ये अधिकारी चर्च व उच्च अधिकारियों के वर्चस्व व राजशाही के साथ गठजोड़ से परेशान थे।

(घ) राजनीतिक सत्ता पर भी फ्रांस अब अपना महत्व खोता जा रहा थी निरंकुश राजशाही के विरोध में एक सामाजिक संकेत स्पष्ट हो गया।

फलतः राजा लुई 16 वें को उपरोक्त परिस्थितियों से बाध्य होकर स्टेट्स जनरल की बैठक बुलानी पड़ी।

स्पष्ट है कि इस बैठक से पहले ही वे परिस्थितियाँ तैयार हो चुकी थीं जिसने फ्रांसीसी क्रांति के घटित होने को अवश्यंभावी बना दिया था। अतः यह कहना कि स्टेट्स जनरल की बैठक नहीं होती तो फ्रांसीसी क्रांति नहीं होती वस्तुतः क्रांति के महत्व को कम करना होगा।

प्रश्न की मांग के संदर्भ में उत्तर में भटकाव है

प्रश्न की संरचना पर ध्यान दें

2


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

19. "यद्यपि 17वीं-18वीं सदी में इंग्लैंड में हो रहे सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी रूपांतरणों ने भावी औद्योगिक क्रांति का आधार तैयार कर दिया था, फिर भी इसमें प्राणवायु का संचार भारत द्वारा ही किया गया।" टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"Though the social, economic and technical transformation in 17th-18th century England laid the future base for the industrial revolution, still the life breath came from India only." Comment. (250 words) 12.5

उपरोक्त कथन पूर्णतया युक्तियुक्त है जिसकी पुष्टि निम्न तथ्य करते हैं:-

(i) जब ब्रिटिश भारत में आये थे तो भारत का वैश्विक जीडीपी में हिस्सा करीब 23% एवं वैश्विक व्यापार में हिस्सा 27% था परन्तु जब ब्रिटिश भारत से गए तो भारत का वैश्विक GDP में हिस्सा 3% एवं वैश्विक व्यापार में हिस्सा मात्र 4% रह गया।

आशय है कि इसी दौर में ब्रिटिश में औद्योगीकरण तीव्र गति से फला। इसका कारण जैसा कि उपरोक्त तथ्य स्पष्ट करते हैं भारतीय अर्थव्यवस्था की कीमत पर ब्रिटिश का औद्योगिक विकास था। भारत अब ब्रिटिश को केवल कच्चे माल का निर्यातक बन कर रह गया।

(ii) पुनः ब्रिटिश उद्योग भारत से आयातित सस्ते कच्चे माल पर सशक्त एवं पुष्ट होते गए।

(iii) भारत के रूप में ब्रिटेन को अमेरिकी उपनिवेश खोने के बाद एक वृहद बाजार मिला। जहाँ वे अपने औद्योगिक उत्पाद को वृहद मात्रा में खपा सकते

[Margin remarks:]
ब्रिटेन में हुए औद्योगिक क्रान्ति की पृष्ठभूमि की चर्चा करें
↳ राजनैतिक
↳ सामाजिक
↳ आर्थिक
↳ भौगोलिक
↳ प्रौद्योगिकी
इत्यादि

प्रभावी व संक्षिप्त भूमिका लिखें

स्पष्ट लेखन का प्रयास करें


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

थे। ब्रिटिश सरकार के समर्थन से भारत की कीमत (कच्चा माल व बाजार) पर ब्रिटिश उद्योग दिन-प्रतिदिन पुष्ट होते गए।

(iv) हांलाकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि 17वीं-18वीं शती में इंग्लैंड में हो रहे सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी रूपांतरणों ने भावी औद्योगिक क्रांति का आधार तैयार किया, परन्तु लाभ व व्यावसायिक दृष्टिकोण से इसमें प्राणवायु सस्ते भारतीय कच्चे माल व संरक्षित विपरीत नीतियों ने भरी।

यही कारण था कि जब ब्रिटेन, भारत आया था तब उसकी वैश्विक GDP में हिस्सेदारी 00.3% थी जो 1947 के समय बढ़कर लगभग 10% हो गई। जो ब्रिटिश औद्योगीकरण में भारत की भूमिका को स्पष्ट करता है।

(v) भारतीय उपनिवेश ने न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से बल्कि एक बड़ी मात्रा में सेना, खाद्य-सामग्री आदि की पूर्ति के द्वारा भी ब्रिटिश औद्योगिक हितों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

(vi) भारत में ब्रिटिश द्वारा किये गये रेलवे के विकास ने जहाँ भारतीय जनता की जो विक

तथ्यों की उचित जाँच कर लें।

प्रश्न के द्वितीय पक्ष पर कुछ चर्चा की गई है। सभी पक्षों पर स्पष्ट चर्चा करते तो अच्छा था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर ब्रिटिश निजी उद्योगपतियों को ~~5%~~ 5% के
गारंटीकृत निवेश रिटर्न प्रदान किए, यही रेलवे
के विकास ने देश के कोने-कोने से संसाधनों
को कच्चे माल के एकत्रीकरण में सहायता निभायी।
यही कारण है कि 19वीं सदी के अंतिम
दौर में हम ब्रिटेन में तीव्र औद्योगीकरण
के स्वरूप पाते है।

इस प्रकार ब्रिटेन का औद्योगीकरण, भारत
के विऔद्योगीकरण की कीमत पर हुआ।
हालांकि ब्रिटेन में इसकी शुरुआत काफी पहले हो चुकी
थी परंतु यह अपने चरम पर औपनिवेशिक शासन
के 200 वर्षों में ही पहुंचा।

2½

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | — | 1 | 1 | .25 | — | .25 | |
| Grade | | C | C | C | | B | |


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

## प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें **बीस** प्रश्न हैं तथा **हिन्दी** और **अंग्रेज़ी** दोनों में छपे हैं।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

## QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **TWENTY** questions printed both in **HINDI** and in **ENGLISH**.*

*All the questions are compulsory.*

*The number of marks carried by a question is indicated against it.*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

## रफ कार्य के लिये स्थान

## (Space for Rough Work)



*Copyright – Drishti The Vision Foundation*